अमरकांत की कहानियों का विश्लेषणात्मक अनुशीलन

AMARKANT KI KAHANIYOM KA VISHLESHANATMAK ANUSHEELAN

Thesis submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

for the award of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

HINDI

under the Faculty of Humanities

By

KRISHNAPRIYA T.P

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Kochi-682 022

AUGUST 2017

Declaration

I hereby declare that the thesis entitled **"AMARKANT KI KAHANIYOM KA VISHLESHANATMAK ANUSHEELAN"** is the outcome of the original work done by me, and the work did not form part of any dissertation submitted for the award of any degree, diploma, associateship, or any other title or recognition from any university or institution.

Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology
Kochi-22.

Krishnapriya T.P.
Research Scholar

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

Certificate

This is to certify that the thesis entitled **"AMARKANT KI KAHANIYOM KA VISHLESHANATMAK ANUSHEELAN"** is a bonafide record of research work carried by **KRISHNAPRIYA T.P** under my supervision for Ph.D (Doctor of Philosophy) Degree and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any university. All the relevant correction and modifications suggested by the audience during the pre-synopsis seminar and recommended by the Doctoral Committee of the candidate has been incorporated in the thesis.

Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology
Kochi-22.

Dr. N.G. DEVAKI
Supervising Teacher

Place : Kochi
Date :

"समय परिवर्तनशील है। वह अपने अनेक विरोधाभासों, अंतर्द्वंद्वों, संघर्षों और संभावनाओं को लिए आगे बढ रहा है। जो रचनाकार इस समय की प्रगतिशील सच्चाइयों को पहचानता है वही उसे शब्दों में उतार सकता है, जिससे उसकी कृतियाँ उस समय की पहचान बन जाती हैं...."

—अमरकांत

भूमिका

अमरकांत का सृजनधर्मी व्यक्तित्व उनकी निजी ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव से उद्‌भूत है। उनके लिए साहित्य मन बहलाने की वस्तु नहीं था, बल्कि सामाजिक उद्धार का हथियार था। साहित्य के क्षेत्र में उनका पदार्पण स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद हुआ था। भारतीय समाज उस समय संघर्ष के दौर से गुज़र रहा था। भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में अस्थिरता छा गई थी। पराधीन भारत में जन्मे और स्वाधीन भारत में जीवित अमरकांत ने रचना को अपना सामाजिक दायित्व समझा और सामाजिक विद्रूपताओं को शब्दबद्ध भी किया। उनकी कहानियाँ भ्रष्ट व्यवस्था में बुनियादी बदलाव द्वारा सामाजिक उद्धार की कामना करती हैं तथा आगामी पीढ़ी के लिए संघर्ष करते हुए ज़िंदगी में आगे बढ़ने का संदेश भी देती हैं। ऐसे एक महान हस्ती की रचनाओं के अध्ययन एवं विश्लेषण करना और उसकी संभावनाओं को परखना लाज़िमी है। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकार्य के लिए अमरकांत की कहानियों को आधार रूप में लिया गया और विषय रखा गया : **"अमरकांत की कहानियों का विश्लेषणात्मक अनुशीलन।"**

अध्ययन की समग्रता को ध्यान में रखते हुए विषय को छह अध्यायों में विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय है - 'स्वातंत्र्योत्तर कहानी और अमरकांत'। इस अध्याय के अंतर्गत स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कहानी का संक्षिप्त परिचय देते हुए स्वातंत्र्योत्तर कहानी के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर प्रकाश डाला गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी अर्थात् नई कहानी से लेकर समकालीन कहानी तक हिन्दी कहानी के क्षेत्र में आए परिवर्तनों पर विचार किया गया है तथा इसमें अपने असीम योगदान दिए प्रमुख कहानीकारों का जिक्र करते हुए अमरकांत के वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है - 'अमरकांत की कहानियों का सामाजिक संदर्भ'। इस अध्याय में मुख्य रूप से अमरकांत की कहानियों में अभिव्यक्त भारतीय समाज का जिक्र किया गया है। तत्कालीन समाज का मोहभंग, बेरोज़गारी, पारिवारिक संबन्धों में आए बदलाव, तथा शोषण के विभिन्न आयाम आदि मुद्दों पर विचार किया गया है।

'अमरकांत की कहानियों का राजनीतिक संदर्भ' तीसरे अध्याय का शीर्षक है। इसमें राजनीति की अवधारणा दी गई है। राजनीति एवं प्रशासन के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण, चुनाव की राजनीति, सांप्रदायिकता आदि पहलुओं पर विचार करते हुए व्यवस्था के खोखलेपन पर व्यंग्य करनेवाली कहानियों का विश्लेषण हुआ है तथा अमरकांत की उन कहानियों पर भी विचार किया गया है जिनमें क्रान्ति के आह्वान की गूंज मुखरित है।

चौथे अध्याय का शीर्षक है - 'अमरकांत की कहानियों का आर्थिक संदर्भ'। इस अध्याय के अंतर्गत बेरोज़गारी, आर्थिक अभाव, पारिवारिक विघटन,

रिश्वतखोरी की समस्या आदि मुद्दों पर विचार करते हुए आर्थिक रूप से पराधीन एवं स्वतंत्र नारी की समस्याओं को रेखांकित किया गया है। आर्थिक रूप से शोषित अन्य हाशिएकृत समाज पर भी प्रकाश डाला गया है।

पांचवां अध्याय 'अमरकांत की कहानियों का सांस्कृतिक संदर्भ' के अंतर्गत अमरकांत की कहानियों में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय संस्कृति, पारिवारिक व्यवस्था, रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज़, मेला और उत्सव, संगीत आदि की ओर संकेत किया गया है। आगे समाज पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, सांस्कृतिक विस्थापन की समस्या, कला और साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त अपसंस्कृति आदि पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन हुआ है तथा अमरकांत की कहानियों में प्रतिफलित धार्मिक सहिष्णुता का आह्वान एवं धार्मिक अंधविश्वासों के विरोध की प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया है।

छठा एवं अंतिम अध्याय है - 'अमरकांत की कहानियों का शिल्प पक्ष'। इस अध्याय में अमरकांत की कहानियों की कथ्यगत एवं चरित्रगत विशेषताओं का अंकन हुआ है। उनकी कहानियों की भाषिक विशिष्टताएँ अर्थात् भिन्न-भिन्न शब्द-प्रयोग, वाक्य संरचना, कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ, लोकोक्ति एवं मुहावरे, संगीत तत्व देशकाल एवं वातावरण आदि पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

इसके बाद उपसंहार के रूप में इस शोधकार्य की निचोड़ प्रस्तुत है। अंत में पंचसूत्री क्रमानुसार सहायक ग्रंथसूची प्रस्तुत की गई है।

कृतज्ञता ज्ञापन

शोधकार्य के इस अंतिम चरण में दिल में बहुत लोगों के चेहरे झिलमिलाते रहते हैं जो समय-समय पर मेरा सहयोग देते रहे, मेरी सहायता करते रहे।

मेरी शोध निर्देशिका डॉ. एन.जी. देवकी जी, जिनके सहयोग के बिना यह शोधकार्य संपन्न नहीं हो जाता। उन्होंने समय-समय पर मेरी शंकाओं को दूर करके शोधयात्रा के आद्यंत मेरा साथ दिया। उनके महत्वपूर्ण सुझावों के फलस्वरूप ही मेरा यह शोधकार्य पूर्ण हो सका। उनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगी।

मेरे विषय-विशेषज्ञ डॉ. आर. शशिधरन जी के प्रति भी मैं अपनी असीम कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनके सतत प्रोत्साहन की वजह से यह शोधकार्य संपन्न हुआ है।

आगे विभाग के मेरे अन्य गुरुजन विशेषकर विभागाध्यक्षा डॉ. के. वनजा जी, डॉ. के. अजिता जी एवं डॉ. एन. मोहनन जी के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने शोधकार्य के प्रत्येक चरण में अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

अमरकांत जी के बेटे अरविंदजी के प्रति एवं राँची विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त आचार्य रविभूषण जी के प्रति भी मैं धन्यवाद अदा करती हूँ जिन्होंने अपनी तमाम व्यस्तताओं के बीच भी मेरी मदद की है।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पुस्तकालय के अधिकारियों विश्वविद्यालय के पुस्तकालय अधिकारियों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। हिन्दी विभाग के कार्यालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

इस शोधकार्य के लिए मैं ने जिन-जिन पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का सहारा लिया है उनके लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरे मित्र जिन्होंने सुख एवं दुःख के पलों में मेरा साथ देते हुए मुझमें आत्मबल का संचार किया है उनके प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ हूँ।

परिवार के सभी सदस्यों के सामने मैं नतमस्तक हूँ, उनकी कृपा एवं निरंतर प्रोत्साहन से ही मैं यहाँ तक पहूँच पायी हूँ।

उन सारे व्यक्तित्वों के प्रति मैं अपना असीम आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में शोधकार्य के आद्यंत मेरा साथ दिया है।

अंत में यह शोध प्रबंध विद्वानों के समक्ष सविनय प्रस्तुत कर रही हूँ। खामियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

सविनय

कृष्णप्रिया टी.पी.

शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्चिन-22

तारीख :

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

अध्याय-एक 1-59

स्वातंत्र्योत्तर कहानी और अमरकांत

1.1 स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी कहानी : संक्षिप्त परिचय

1.2 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

- 1.2.1 सामाजिक परिवेश
- 1.2.2 राजनीतिक परिवेश
- 1.2.3 आर्थिक परिवेश
- 1.2.4 सांस्कृतिक परिवेश

1.3 कहानी आंदोलन

- 1.3.1 नई कहानी
- 1.3.2 साठोत्तरी कहानी
  - 1.3.2.1 अकहानी
  - 1.3.2.2 सचेतन कहानी
  - 1.3.2.3 सहज कहानी
  - 1.3.2.4 समांतर कहानी
  - 1.3.2.5 सक्रिय कहानी
  - 1.3.2.6 समकालीन कहानी
  - 1.3.2.7 जनवादी कहानी

1.4 समकालीन कहानी

- 1.4.1 प्रमुख प्रवृत्तियाँ
  - 1.4.1.1 उपनिवेशवाद का विरोध
  - 1.4.1.2 सांप्रदायिकता
  - 1.4.1.3 स्त्री विमर्श
  - 1.4.1.4 दलित विमर्श
- 1.4.2 अन्य प्रवृत्तियाँ

1.5 प्रमुख स्वातंत्र्योत्तर कहानीकार
- 1.5.1 भीष्म साहनी
- 1.5.2 गिरिराज किशोर
- 1.5.3 फणीश्वरनाथ रेणु
- 1.5.4 मोहन राकेश
- 1.5.5 निर्मल वर्मा
- 1.5.6 राजेन्द्र यादव
- 1.5.7 महीप सिंह
- 1.5.8 उषा प्रियंवदा
- 1.5.9 मार्कंडेय
- 1.5.10 मन्नू भंडारी
- 1.5.11 कमलेश्वर
- 1.5.12 दूधनाथ सिंह
- 1.5.13 मृदुला गर्ग
- 1.5.14 ममता कालिया
- 1.5.15 नासिरा शर्मा

1.6 अमरकांत
- 1.6.1 व्यक्तित्व
- 1.6.2 रचना संसार
  - 1.6.2.1 संस्मरण
  - 1.6.2.2 उपन्यास साहित्य
  - 1.6.2.3 बाल साहित्य
  - 1.6.2.4 प्रौढ़ साहित्य
  - 1.6.2.5 कहानी साहित्य
  - 1.6.2.6 पुरस्कार

1.7 निष्कर्ष

अध्याय-दो 60-120

अमरकांत की कहानियों का सामाजिक संदर्भ

2.1 समाज : अर्थ एवं परिभाषा

2.2 व्यक्ति और समाज

2.3 सामाजिक चेतना

2.4 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज

2.5 अमरकांत की कहानियों में भारतीय समाज

- 2.5.1 मोहभंग
- 2.5.2 बेरोज़गारी
- 2.5.3 धर्म, ईश्वर और भाग्य पर विश्वास
- 2.5.4 शोषण के विभिन्न आयाम
  - 2.5.4.1 भिखमंगों और नौकरों का शोषण
  - 2.5.4.2 जाति या वर्ण के नाम पर शोषण
  - 2.5.4.3 स्त्री शोषण
    - 2.5.4.3.1 स्त्री का सर्वंसहा रूप
    - 2.5.4.3.2 स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण
    - 2.5.4.3.3 पुरुष द्वारा स्त्री का शोषण
    - 2.5.4.3.4 स्त्री प्रतिरोध
- 2.5.5 बदलते पारिवारिक संबन्ध
  - 2.5.5.1 पीढ़ी संघर्ष
  - 2.5.5.2 पति-पत्नी
    - 2.5.5.2.1 असंतृप्त वैवाहिक जीवन एवं विवाहेतर संबन्ध
  - 2.5.5.3 अंतर्जातीय विवाह
- 2.5.6 निष्कर्ष

अध्याय-तीन 121-172

अमरकांत की कहानियों का राजनीतिक संदर्भ

3.1 राजनीति : अवधारणा
3.2 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति
3.3 राजनीतिज्ञों से मोहभंग
3.4 राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं शोषण
3.5 भ्रष्ट राजनीतिक नेता
3.6 चुनाव की राजनीति
3.7 जातिवाद
3.8 सांप्रदायिकता
3.9 प्रशासनिक भ्रष्टाचार एवं शोषण
3.9.1 पुलिस व्यवस्था द्वारा शोषण
3.9.2 नौकरी के क्षेत्र में भ्रष्टाचार
3.9.3 कार्यालय अधिकारियों और कर्मचारियों की अनास्था एवं शोषण
3.10 व्यवस्था के खोखलेपन पर व्यंग्य
3.11 क्रान्ति का आह्वान
3.12 निष्कर्ष

अध्याय-चार 173-211

अमरकांत की कहानियों का आर्थिक संदर्भ

4.1 अर्थ से तात्पर्य
4.2 अमरकांत की कहानियों में बेरोज़गारी
4.3 आर्थिक अभाव
4.4 पारिवारिक विघटन
4.5 अर्थ के प्रति लालसा
4.6 आर्थिक परिवेश और नारी
4.6.1 आर्थिक रूप से पराधीन नारी
4.6.2 वेश्या होने के लिए अभिशप्त नारी
4.6.3 आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी

4.7 रिश्वतखोरी
4.8 आर्थिक रूप से शोषित हाशिएकृत समाज
4.9 निष्कर्ष

अध्याय-पाँच 212-248

अमरकांत की कहानियों का सांस्कृतिक संदर्भ

5.1 संस्कृति : अवधारणा
5.2 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय संस्कृति
5.3 अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्गीय संस्कृति
5.3.1 पारिवारिक व्यवस्था
5.3.2 रहन-सहन एवं वेशभूषा
5.3.3 मेला और उत्सव
5.3.4 रीति-रिवाज़
5.3.5 संगीत
5.3.6 कला और साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त अपसंस्कृति
5.3.7 पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
5.3.8 संस्कृतियों का द्वंद्व एवं सांस्कृतिक विस्थापन
5.3.9 धर्म और संस्कृति
5.3.9.1 धार्मिक सहिष्णुता का आह्वान
5.4.9.2 धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध
5.4 निष्कर्ष

अध्याय-छः 249-272

अमरकांत की कहानियों का शिल्पपक्ष

6.1 कथ्यगत एवं चरित्रगत विशेषताएँ
6.2 भाषिक विशिष्टताएँ
6.2.1 शब्द प्रयोग
6.2.1.1 संस्कृत शब्द
6.2.1.2 तद्भव शब्द

6.2.1.3 देशज शब्द
6.2.1.4 अरबी शब्द
6.2.1.5 अंग्रेज़ी शब्द
6.2.1.6 ध्वन्यात्मक शब्द
6.2.1.7 निरर्थक शब्द
6.2.2 वाक्य संरचना
6.2.3 शैली
6.2.3.1 आत्मकथात्मक शैली
6.2.3.2 पत्रात्मक शैली
6.2.3.3 विवरणात्मक शैली
6.2.3.4 रेखाचित्र या व्यक्ति चरित्र की पद्धति
6.2.3.5 पूर्वदीप्ति शैली
6.2.3.6 संवाद शैली
6.2.3.7 सांकेतिकता
6.2.4 प्रतीक योजना
6.2.5 सादृश्य विधान
6.2.6 लोकोक्ति और मुहावरे का प्रयोग
6.2.6.1 मुहावरे
6.2.6.2 लोकोक्तियाँ
6.3 गीत-तत्व
6.4 देशकाल और वातावरण
6.5 निष्कर्ष

उपसंहार 273-279

परिशिष्ट 280-281

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 282-296